Legends of Odisha

Of all the regional cultures, Odisha or the ancient Kalinga played a very conspicuous and vital role in the cultural matrix of Indian civilization. From the time immemorial Odisha has attracted a large number of scholars, artists and tourists.

Kantakabi Lakshmikanta Mohapatra was born at Bakharabad, Cuttack on 09.12.1888. He hailed from the family of freedom fighters and received the honour of Kantakabi in 1934. From his childhood, he was fond of songs, music, drama and literature. By cruel blow of destiny, he was affected by leprosy; but it could not prevent him from pursuing his creative writing. He contributed to all aspects of literary world of Odia literature. He has written beautiful parodies, the most famous among them is "Chataka Chandra Hasa Champu". Kantakabi used to encourage young writers through his magazine, "Dagara", which was being published from Bhadrak, Odisha.

When the freedom movement led by Mahatma Gandhi gripped the entire nation, Kantakabi through his patriotic songs used to enthuse the masses. He also actively participated in the movement of unification of Odia speaking areas and penned down "Bande Utkal Janani", the song which has been accorded the State Anthem by the Odisha State. He breathed his last on 24.02.1953. He lives in the heart of Odia people through his immortal work.

Born on 08.01.1926 at Raghurajpur village in Puri, Kelucharan Mohapatra, is widely known as father of architect of Odissi dance. The story of his artistic experience touches all the salient features of the cultural life of Odisha and has become the story of growth and recognition of 'Odissi style' as one of the classical dances of India.

Fondly known as Guruji, he established himself as a dancer and choreographer with the Annapurna "B" Theatre in Cuttack in 1940. He established his own distinct style and developed further dances in a systematic and precise manner. He travelled widely for popularizing Odissi dance and was associated with Odissi Research Centre in Bhubaneswar for more than a decade.

In 1966, Guruji received the prestigious Sangeet Natak Akademi Award. He was conferred with Padmashree in 1974 and Padma Bhushan in 1988. In 1993, Guruji established "Srjan" in Bhubaneswar, as a humble offering to dance, music and rich national ethos. Throughout his lifetime, he made over 200 solo compositions and about 50 dance ballets to his credit and over 5000 students from across the world learned Odissi dance from him. For him, dance was a Sadhana and teaching, a Dharma. His demise on 07.04.2004 was a personal loss to many worldwide, who knew him through his dance and love for national ethos. His legacy lives on.

Parbati Ghose a.k.a. Chapala and Chandana was a legend in the Odia Film Industry. She was born in Cuttack, Odisha in 1942. She came from a family rich in culture and education. She got indulged with dancing lessons from great exponents like Guru Kelucharan Mohapatra, Guru Dayal Sharma and Guru Suresh Routray. From a very young age she participated in a lot of social causes and State celebrations like Rabindra Jayanti. She got involved in All India Radio and participated in the social and cultural programmes of the Praja Socialist Party.

The huge success of the movie "Sri Jagannath" was defining moment of her long and memorable career. In 1953, she was offered the lead role in "Amari Gaan Jhua" opposite Gour Ghose. In 1956, she played a leading role in "Bhai Bhai" a sensitive story of division of caste and wealth. She also acted in National award winning movies "Laxmi" in 1962, "Kaa" in 1965 and "Stree" in 1968. Later, she kept her passion alive through acting in TV serials and Radio plays and soon conferred the top most status in both. She also made short films like "Sankalp", "Surakhya" and "Amari Gaan" for Family Welfare Department, Government of Odisha. She breathed her last on 12.02.2018, leaving behind her imprint and legacy in the Odia Film Industry.

The music of Akshya Kumar Mohanty combined the nativeness of Odisha in all its forms – folk, classical and emerging. He was the most sought after music Director of Odia Film Industry who is widely known for his romantic songs. He was also a singer of repute and a lyricist. He experimented with themes and his creation started a new cult of ballads in Odia, such as "Kanchi Abhijana", "Randipua Ananta" and "Konark Gatha".

Born on 12.10.1937, Akshya Kumar Mohanty has written more than 4000 songs, sung over 8000 songs and composed music in 106 feature films. His literary work also includes 100 short stories, 12 novels and an autobiography. His writings were crisp, direct and bold. He was a master storyteller in Odia language. He is also known for his peppy youthful songs like "Jaare Bhasi Bhasi Ja". His literary work also reflects the sensitivity and depth of an artist to do justice to the complex feelings and emotions. His immortal songs and compositions remain the most heard and revered Odia songs among the younger generation also. He passed away on 17.11.2002.

Department of Posts is pleased to issue a set of Commemorative Postage Stamps on the Legends of Odisha who have contributed magnificently to the art and culture of not only Odisha but also took the Indian values and culture to the international panorama.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/	:	Smt. Nenu Gupta
Cancellation Cachet	:	
Text	:	Referenced from the contents provided by the proponent.

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

ओडिशा की महान विभूतियां
LEGENDS OF ODISHA

पार्वती घोष
PARBATI GHOSE

केलूचरण महापात्र
KELUCHARAN MOHAPATRA

अक्षय कुमार महान्ति
AKSHYA KUMAR MOHANTY

कांतकवि लक्ष्मीकांत महापात्र
KANTAKABI LAKSHMIKANTA MOHAPATRA

विवरणिका BROCHURE

ओडिशा की महान विभूतियां

भारत की विविध क्षेत्रीय संस्कृतियों में से एक, ओडिशा, जिसे प्राचीन समय में कलिंग के नाम से जाना जाता था, की भूमिका भारतीय सभ्यता के सांस्कृतिक ताने–बाने में मुखर एवं अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन काल से ही ओडिशा, बड़ी संख्या में विद्वानों, कलाकारों एवं सैलानियों को आकर्षित करता रहा है।

कांतकवि लक्ष्मीकांत महापात्र का जन्म 09.12.1888 को बाखराबाद, कटक में हुआ। वे, स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार से थे। 1934 में लक्ष्मीकांत जी को कांतकवि की उपाधि प्रदान की गई। कांतकवि लक्ष्मीकांत जी को बचपन से ही गीत, संगीत, नाटक एवं साहित्य में अत्यंत रुचि थी। दुर्भाग्यवश वे कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गए, परंतु उन्होंने रचनात्मक लेखन कार्य जारी रखा। लक्ष्मीकांत जी ने उड़िया साहित्य जगत की सभी विधाओं में रचनाएं लिखी। उन्होंने उच्च कोटि के अनेक हास्यव्यंग्य भी लिखे। इनमें से सबसे प्रसिद्ध ''चटक चंद्र हास चंपू'' है। कांतकवि, भद्रक से प्रकाशित होने वाली अपनी पत्रिका ''डगर'' के माध्यम से युवा लेखकों को भी प्रोत्साहित करते थे।

जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन की आग पूरे देश में फैल रही थी, उस समय कांतकवि, देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत अपने गीतों से जनमानस में उत्साह का संचार कर रहे थे। उन्होंने उड़िया भाषी क्षेत्रों के एकीकरण के लिए आंदोलन में भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया। कांतकवि लक्ष्मीकांत महापात्र ने ''वंदे उत्कल जननी'' गीत की रचना की। इस गीत को ओडिशा राज्य द्वारा राज्यगान का दर्जा दिया गया हैं। 24.02.1953 को लक्ष्मीकांत जी का निधन हो गया है, परंतु आज भी वे अपनी अमर रचनाओं की बदौलत उड़िया लोगों के दिलों में वास करते हैं।

08.01.1926 को पुरी के रघुराजपुर गांव में जन्मे केलूचरण महापात्र को ओडिशी नृत्य शैली के जनक के रूप में जाना जाता है। कलाकार के रूप में उनके अनुभव, ओडिशा के सांस्कृतिक जीवन की सभी विशेषताओं को समेटे हुए हैं तथा भारत के शास्त्रीय नृत्य के रूप में, 'ओडिसी शैली' के विकास और प्रसिद्धि की कहानी कहते हैं।

गुरूजी के नाम से सुविख्यात केलूचरण महापात्र ने 1940 में अन्नपूर्णा ''बी'' थियेटर में एक नर्तक एवं नृत्य निर्देशक के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली विकसित की और सुनियोजित रूप से और बारीकियों से सुसज्जित नृत्य शैली का विकास किया। ओडिसी नृत्य को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से उन्होंने देश–विदेश की यात्रा की और एक दशक से भी अधिक समय तक वे, भुवनेश्वर स्थित ओडिसी अनुसंधान केंद्र से जुड़े रहे।

1966 में गुरू केलूचरण को प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। तत्पश्चात् 1974 में उन्हें पद्मश्री तथा 1988 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1993 में गुरू जी ने भुवनेश्वर में नृत्य, संगीत और भारत की समृद्ध राष्ट्रीय संस्कृति को समर्पित नृत्यवास 'सृजन' की स्थापना की। अपने जीवनकाल में उन्होंने 200 से अधिक एकल एवं लगभग 50 नृत्य गाथाओं का सृजन किया। देश–विदेश के 5000 से अधिक शिष्यों ने उनसे ओडिसी नृत्य की शिक्षा ग्रहण की। गुरू जी के लिए नृत्य, साधना एवं नृत्य की शिक्षा, धर्म स्वरूप थी। 07.04.2004 को गुरू जी का निधन हो गया। नृत्य एवं राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति प्रेम के लिए सुप्रसिद्ध गुरूजी का निधन, विश्वभर के कला पारखियों के लिए व्यक्तिगत क्षति थी, परंतु उनकी समृद्ध विरासत आज भी सजीव है।

पार्वती घोष उर्फ चपला और चंदना, उड़िया फिल्म जगत की एक महान विभूति थीं। उनका जन्म 1942 में कटक, उड़ीसा में हुआ। वे, संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में समृद्ध परिवार से ताल्लुक रखती थीं। उन्होंने, गुरू केलूचरण महापात्र, गुरू दयाल शर्मा और गुरू सुरेश राउत्रे जैसे महान गुरुओं से नृत्य की शिक्षा ली। युवावस्था से ही उन्होंने अनेक सामाजिक कार्यों और रवींद्र जयंती जैसे सरकारी समारोहों में भी भाग लिया। पार्वती घोष आकाशवाणी से भी जुड़ी हुई थी। उन्होंने प्रजा सामाजिक पार्टी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया।

''श्री जगन्नाथ'' नामक फिल्म की अपार सफलता, पार्वती घोष जी के लंबे एवं यादगार कैरियर का उत्कर्ष था। 1953 में उन्होंने गौर घोष के साथ 'आमारी गाना झुआ' में मुख्य नायिका की भूमिका अदा की। 1956 में उन्होंने जाति एवं संपति के आधार पर विभाजित समाज की मर्मस्पर्शी गाथा 'भाई–भाई' में मुख्य नायिका का किरदार निभाया। उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित फिल्मों जैसे लक्ष्मी (1962), का (1965) और स्त्री (1968) में भी काम किया। बाद में, उन्होंने टीवी धारावाहिकों और रेडियो नाटकों के जरिए अपने इस शौक को जारी रखा और जल्द ही यहां भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उन्होंने परिवार कल्याण विभाग, ओडिशा सरकार के लिए संकल्प, सुरख्या और आमरी गान जैसी लघु फिल्में भी बनाईं। उन्होंने 12.02.2018 को अंतिम सांस ली, परंतु उनकी समृद्ध विरासत ने उड़िया फिल्म उद्योग के फलक पर अमिट छाप छोड़ी है।

अक्षय कुमार महान्ति के संगीत में, ओडिशा के संगीत की लोक और शास्त्रीय शैली के साथ–साथ नई उभरती शैलियों का बेजोड़ मेल है, जिसमें खास ओडिशा की माटी की सुगंध है। वे उड़िया फिल्म जगत के जाने–माने संगीत निर्देशक थे, जिन्हें उनके रूमानी गीतों के लिए जाना जाता है। वे एक प्रतिष्ठित गायक और संगीतकार भी थे। उन्होंने प्रचलित विषयों के साथ प्रयोग कर उड़िया में एक नई समृद्ध परंपरा का सूत्रपात किया, जिसमें कांची, अभिज्ञान, रांदीपुआ अनंत और कोणार्क गाथा शामिल हैं।

12.10.1937 को जन्मे अक्षय कुमार महान्ति ने 4000 से अधिक गीत लिखे, 8000 से अधिक गीत गाए और 106 फिल्मों में संगीत दिया। उनके साहित्यिक कार्य में 100 लघु कहानियां, 12 उपन्यास और एक आत्मकथा शामिल है। उनकी रचनाएं चुटीली, स्पष्टवादिता एवं निर्भीकता से परिपूर्ण हैं। वे उड़िया भाषा के महान कथाकार थे। उन्हें उनके जोशीले व युवा उत्साह से भरे गीतों जैसे ''जारे भासी भासी जा'' के लिए भी जाना जाता है। उनकी साहित्यिक रचनाओं में उस संवेदनशीलता और गहराई की झलक मिलती है, जो जटिल मानवीय मनोभावों को उकेरने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उनके अमर गीत एवं रचनाएं, नई पीढ़ी में भी सबसे अधिक सुने और पसंद किए जाने वाले उड़िया गीतों में गिने जाते हैं। 17.11.2002 को अक्षय महान्ति का निधन हो गया।

डाक विभाग, ओडिशा की इन महान विभूतियों पर स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है, जिन्होंने न केवल ओडिशा की कला एवं संस्कृति के क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया, बल्कि भारतीय मूल्यों एवं संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1000 पैसे (4)
Denomination	:	1000 p (4)
सोविनियर शीट मूल्य	:	5000 पैसा
Souvenir Sheet Price	:	5000 p
मुद्रित सोविनियर शीट	:	1.11 लाख
Souvenir Sheets Printed	:	1.11 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00